ISSN 2395-051X

विश्व बाजार में हिन्दी भाषा की प्रासंगिकता

डॉ. आनंद तिवारी
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष-वाणिज्य विभाग
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश -

विश्व के 150 देशों में हिन्दी भाषा का अस्तित्व है जिनमें अमेरिका, जर्मनी, नेपाल, सिंगापुर, दक्षिण अफ्रीका तथा न्यूजीलैण्ड जैसे देश शामिल हैं अमेरिका के 45 विश्वविद्यालय सहित विश्व के 176 देशों में हिन्दी भाषा को पढ़ाया जाता है विदेशों में 25 से अधिक समाचार पत्रों तथा पत्रिकायें हिन्दी भाषा में प्रकाशित होती हैं। समग्र विश्व में 120 करोड़ से अधिक लोग हिन्दी भाषा समझते हैं जहाँ तक भारत का सवाल है यह भाषा भारत के 18 करोड़ लोगों की मातृभाषा है तथा 30 करोड़ जनमानस की सैकेंण्ड लैंग्वेज है अर्थात् हिन्दी भाषा से प्रतिदिन 48 करोड़ लोग संपर्क में रहते हैं। वर्ल्ड इकोनामिक फोरम ने पॉवर इण्डेक्स तैयार किया है जिसके अनुसार हिन्दी विश्व में 10वे स्थान पर है अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने में 16% भौगोलिक दृष्टि से 13% कूटनीतिक मामलों में 10% तथा संप्रेषण की दृष्टि से 8 वें स्थान पर है ये आंकड़े कतिपय सीमा तक निराशा की तस्वीर व्यक्त रेखांकित करते हैं। परंतु फिर भी हिन्दी भाषा विश्व में तीसरे स्थान पर बोली जाने वाली भाषा है। प्रथम स्थान अंग्रेजी भाषा है जिसका मूल कारण अंग्रेजों द्वारा दूसरे देशों को उपनिवेशवादी बनाना रहा है स्पेन, फ्रांस, पुर्तगाल तथा अरब देशों का इतिहास इस बात का साक्षी है कि इन देशों ने दूसरे देशों पर हमला कर वहां अपनी भाषा एवं संस्कृति का प्रसार किया चीनी भाषा दूसरे स्थान पर बोली जाने वाली भाषा है जिसका कारण वहाँ की सर्वाधिक आबादी 140 करोड़ का होना है और ये सभी चाईनीज भाषा बोलते हैं।

मुख्य शब्द - वैश्वीकरण, भूमंडलीकरण, उदारीकरण।

(I) शोध समस्या का चयन :-

किसी भी अर्थव्यवस्था को स्थिरता, गतिशीलता एवं सुदृढ़ता प्रदान करने में तीन बुनियादी संसाधनों की महती भूमिका होती है। एक हैं प्राकृतिक संसाधन जिन्हें प्रो. मार्शल ने प्रकृति के निःशुल्क उपलब्ध माना है दूसरे हैं भौतिक संसाधन जिन्हें एडम स्मिथ आर्थिक क्रियाओं के रूप में परिभाषित करते हैं तीसरे संसाधन के रूप में मानवीय संसाधन के रूप में समाहित किया जाता है जिसके मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा चार आयाम सुनिश्चित किये गये हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार तथा आवास। इन तीनों संसाधनों का संतुलित एवं समन्वित उपयोग कर अर्थव्यवस्था का सर्वांगीण, संगठित तथा समावेशी विकास किया जा सकता है।

जब हम विकास की अवधारणा के औचित्य एवं प्रासंगिकता पर विमर्श करते हैं तो हमें निर्विवाद रूप से यह सुनिश्चित करना होगा कि विकास का आशय केवल आर्थिक विकास से ही है? ... वी. से मांग तथा पूर्ति की शक्तियों द्वारा निर्धारक मानते हैं अथवा प्रो. मेहता के अनुसार विकास का संबंध ... नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास को माना जाये। वस्तुतः आर्थिक विकास, विकास के अर्थशास्त्र का एक ... सकता है सच्चे अर्थों में विकास तभी माना जाएगा जबकि उसमें आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, नैतिक, ... तथा आध्यात्मिक पहलुओं को समावेशित किया जाये।

1991 में भारत ने नवीन आर्थिक नीति को अंगीकार करते हुए वैश्वीकरण भूमण्डलीकरण तथा ... उदारीकरण को आत्मसात कर अधोसंरचनात्मक विकास, विनिर्माणी क्षेत्र में तथा सेवा क्षेत्र में जिस विकास को ... को रखा उसके परिणाम अर्थव्यवस्था में आटोमोबाईल्स, टैक्सटाईल्स, दूरसंचार तथा यातायात क्षेत्र में स्पष्ट ... हुए आर्थिक संवृद्धि की उच्चतम दर तक पहुंचने से वर्ष 2008 की विश्व आर्थिक मंदी को भारत से अप्रभावित ... यही वह दौर था जिसमें भारत ने विश्व व्यापार में पूंजी, तकनीक एवं कौशल का भलीभांति उपयोग किया, ... सेक्टर में रोजगार के नए अवसर न केवल घरेलू बाजार अपितु अंतर्राष्ट्रीय बाजार में मिले और आधारशिला ...

(II) शोध आलेख का उद्देश्य

1. संप्रेषण कौशल में हिन्दी भाषा के योगदान को समझना।
2. वैश्वीकरण एवं विश्व बाजार में हिन्दी भाषा की दशा एवं दिशा को जानना।
3. क्या हिन्दी भाषा वर्ष 2050 में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सर्वाधिक समझी एवं बोली जाने वाली भाषा बन सक... है? समीक्षात्मक रूप में अध्ययन करना।

(III) शोध आलेख की परिकल्पनायें :-

1. व्यापार, वाणिज्य एवं उद्योग को गतिशीलता प्रदान करने में संप्रेषण की महती भूमिका होती है संप्रेषण कौश... में हिन्दी भाषा ने निर्णायक एवं उल्लेखनीय भूमिका का निर्वहन किया है।
2. नवीन आर्थिक नीति 1991 ने भारत को विश्व बाजार से जुड़ने का अवसर दिया मानवीय संसाधन, पूंजी ए... तकनीक के अंतरण के कारण विश्व बाजार में हिन्दी का प्रचार प्रसार निरंतर बढ़ा, जिसके फलस्वरूप हिंदी साहित्य ही नहीं बाजार की विज्ञापन फिल्म जगत दूरदर्शन चैनलों पर खेलकूद तथा मनोरंजन की भाषा बन गयी।
3. समूची दुनिया में भारत एशिया का ऐसा महाद्वीप है जिसमें सर्वाधिक उपभोक्ता वर्ग है व्यापार वाणिज्य ए... उद्योग की समुचित संभावनायें भारत में विद्यमान हैं। आज बाजार का क्षेत्र स्थानीय क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय स्त... से वढ़कर विश्व वाजार के रूप में हो गया है। यही कारण है कि समग्र विश्व में हिन्दी भाषा तीसरे स्थान पर वोली एवं समझी जाने वाली भाषा वन गयी है।

4. विश्व व्यापार में भारत की बढ़ती भागीदारी, भारत में विदेशी कंपनियों द्वारा निवेश तथा विश्व एक ग्राम की परिकल्पना ने हिन्दी भाषा की प्रासंगिकता को बढ़ाया है।

(IV) संप्रेषण कौशल, अध्ययन एवं विश्लेषण :-

विचारों, भावों, संवदेनाओं को अभिव्यक्त की कला का नाम संप्रेपण कौशल है। संप्रेषण को कौशल युक्त बनाने हेतु शब्दों की आवश्यकता होती है शब्दों को भावों में पिरोकर प्रस्तुत करना ही संप्रेपण है परंतु संप्रेषण को प्रभावी बना एवं सशक्त बनाने हेतु भाषा की आवश्यकता होती है। भाषा न केवल अपने मन में उगे विचारों को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम है अपितु राष्ट्र की एकता अखण्डता एवं संप्रभुता के संरक्षण में भी इसकी निर्णायक भूमिका होती है। हिन्दी भाषा ने समग्र भारत में अनेक भाषा भीली, शक, पुराण, डच, पुर्तगाली, मुगल तथा अंग्रेज आए परंतु हिन्दी भाषा ने इन भाषायी लोगों के शब्दों को अपने में अंगीकार कर लिया हिन्दी भाषा में लगभग 1.5 लाख पर्यायवाची शब्द हैं पुर्तगाली शब्द आचार, आर्लापन तुर्की शब्द चम्मच, चेचक, फ्रेंच शब्द काजू, कारतूस, डच शब्द चिड़ियाघर, यूनानी शब्द एकेडमी टेलीफोन तथा अरबी शब्द औरत औलाद जैसे अनेक शब्दों को अपने में समाहित कर लिया। यह हिन्दी भाषा की विशिष्ट पहचान है।

हिन्दी एक वैज्ञानिक भाषा है जिसकी लिपि, स्वर एवं उच्चारण स्पष्ट हैं अंग्रेज इसे वेस्ट फोनेटिड लेग्वेज मानते हैं हिन्दी भाषा का जन्म संस्कृत भाषा से हुआ जिसने अपने को ऊर्जा मंत्र तथा शक्ति माना गया प्राकृत पालि भाषा का अपभ्रंश रूप हिन्दी के रूप में अवतरित हुआ संस्कृत देव भाषा से लोक भाषा रूप में रूपांतरित हो गयी।

(V) निर्वचन

नई शिक्षा नीति में मातृभाषा में शिक्षा पर बल दिया गया परंतु एक तमिल राजनेता ने हिन्दी वर्चस्व को खतरा माना

1. सोशल मीडिया में हिन्दी लिखेंगे सामाजिक प्रतिष्ठा के मंचों पर हिन्दी भाषा बोली जायेगी।
2. भाषा तत्व बनती है जब शब्द रचते है गढ़े जाते हैं साहित्य रचा जाता है ज्ञान का निर्माण होता है ड्राइंग रूम में हिन्दी का अखवार रखेंगे बच्चों को बर्थडे गिट में हिन्दी किताबों को भेंट करेंगे असमिया तथा मलयालियों से सीखेंगे कि साहित्य का सम्मान केसे किया जाता है।
3. प्रत्येक हिन्दी भाषी एक गैर हिन्दी भारतीय भाषा सीखेगा रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सुब्रमण्यम भारती, अमृता प्रीतम, को मूल में पढ़ने से हिन्दी समृद्ध होगी जरूरत है उ.प्र. में तमिल, बिहार में बांग्ला, हरियाणा में तेलगू, राजस्थान में कन्नड़, म.प्र. में मराठी, छत्तीसगढ़ में ओड़िसा सिखाई जाये।

निष्कर्ष :

वर्तमान वैश्वीकरण के युग में हिन्दी भाषा न केवल साहित्य की भाषा तक सीमित रह गयी है बल्कि इसका विस्तार विश्व बाजार पर प्रतिविंवित हो रहा है जिसका ज्वलंत उदाहरण इस तथ्य को लेकर है कि विश्व के अग्रणी

माने जाने वाले कतिपय देशों अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, इंग्लैण्ड तथा चीन की बहुराष्ट्रीय निगमों ने अपने ... भारत से व्यापार संवर्धन एवं विस्तार हेतु हिन्दी भाषा संप्रेषण पर दवाव डालना शुरू कर दिया है समूचा ... बात से भिज्ञ है कि भारत दुनिया का सबसे बड़ा बाजार है जिसकी बुनियाद हिन्दी भाषा है।

सामान्यतः अंग्रेजी भाषा के संबंध में तर्क दिया जाता है कि यह ज्ञान विज्ञान की भाषा है तो प्रश्न ... है जर्मनी, जापान, रूस और चीन ऐसे देश है जिन्होंने मातृ भाषा को अंगीकार देश को उन्नति के शिखर पर पहुंचा दिया डिजीटल वर्ल्ड में अंग्रेजी की तुलना में हिन्दी की सामग्री (विषयक) की मांग 5 गुना ज्यादा है ... उपयोग करने वाले युवा 93 प्रतिशत हिन्दी वीडियो देखते हैं, स्मार्ट फोन में 32 एप्सेस होते हैं जिनमें 8 या 9 ... स्पेशल हैं। ये कतिपय संकेतर है जो बताते हैं कि 2050 में हिन्दी सबसे शक्तिशाली भाषा होगी।

संदर्भ :-

1. हमारा संविधान : सुभाष कश्यप www.44 Books.com
2. हिन्दी का वैश्विक फलक : पवन तिवारी www.Pvavakta.com
3. उच्चशिक्षा की भाषा : www.Jagran.com.
4. हिन्दी के लिए सार्थक प्रयास नहीं दिख रहे हैं hindi.webduni.com
5. हिन्दी दिवस : आसान बनाने के चक्कर में नई भाषा बना रहे हैं हम navbhartatimes.indiatime...